पाठ-14

मैं हूँ महाबाहु ब्रह्मपुत्र

हजारों सालों से मैं चुपचाप बहता आया हूँ। हिमालय की बर्फीली घाटियों से लेकर तिब्बत के पठार, अरुणाचल प्रदेश की दुर्गम घाटियों से होता हुआ मैं असम के मैदान को सींचता रहा हूँ। यहाँ से मैं बांग्लादेश जाता हूँ और अपने को बंगाल की खाड़ी को सौंप देता हूँ। आज मैं तुमसे अपनी कथा कहना चाहता हूँ। अपने अनुभवों से तुमको परिचित कराना चाहता हूँ। बच्चो ! मैं ब्रह्मपुत्र हूँ। ब्रह्मपुत्र नद।

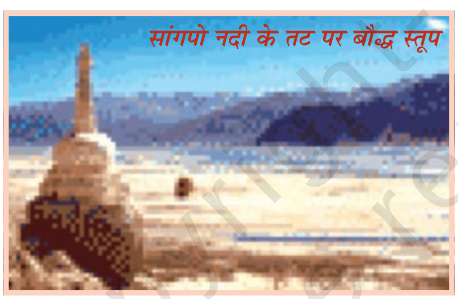

सांगपो नदी के तट पर बौद्ध स्तूप

सबसे पहले मैं अपने नाम के विषय में कहूँगा। पुराणों में कहा गया है कि अमोघा मेरी माँ है और ब्रह्मा मेरे पिता। ब्रह्मा के पुत्र होने के नाते मैं ब्रह्मपुत्र कहलाया। पर मेरे अनेक ऐसे नाम भी हैं जिन्हें सभी नहीं जानते। चीन में अर्थात् तिब्बत के पठारी भाग पर लोग मुझे सॉ–पो भी कहते हैं। सॉ–पो अर्थात विशाल नदी। मेरे अनेक नामों में लुइत भी एक है। मिश्मी लोग मुझे लुइत कहते हैं। उनकी बोली में उसका अर्थ है तारों की राजकुमारी। असमीया भाषा में लुइत नाम काफी चलता है। मेरी प्राचीनता को बताने के लिए कुछ लोग मुझे बुढ़ा लुइत भी कहते हैं। भूपेन हाजरिका ने मेरे ऊपर एक गीत लिखा है। उसमें उन्होंने कहा है– 'बुढ़ा लुइत बोआ किय ?' मेरी धारा के लाल रंग को देखकर संस्कृत में मुझे लौहित्य भी कहा गया। पर मुझे जिस नाम से भी पुकार लो मैं बुरा नहीं मानता।

मेरे जन्म के विषय में मुझे कुछ मालूम नहीं है। भूगर्भ शास्त्र के विद्वान मानते हैं कि मैं हिमालय से भी पहले जन्मा। असम का मैदानी भाग, उनके अनुसार मैंने ही बनाया है। पर मैं ऐसा कह नहीं पाऊँगा। हाँ, मैं तुमको यह अवश्य बता सकता हूँ कि मेरा जन्म कहाँ हुआ। कैलाश पर्वत के नीचे मानसरोवर के पास एक बड़ी हिमानी (चेमा यूंगदंग ग्लेशियर) है। यह मानसरोवर से 100 किलोमीटर की दूरी पर है। यह हिमानी

© Copyright SCERT, Assam
not to be republished

पृथ्वी सतह से 5100 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। इसी से मेरा जन्म हुआ है। यहाँ मैं सॉ पो कहलाता हूँ। सतलुज तथा सिंधु नदियों का उद्‌गम भी मेरे उद्‌गम से ज्यादा दूर नहीं है। मैं भाग्यवान हूँ कि बचपन से ही मुझे मित्र मिलते रहे हैं। मुझे तिब्बत के पठारों से बहते हुए ल्हासा के पास से गुजरने का अवसर मिलता है। यहीं दलाई लामा का महल है। भारत में मेरा स्वागत बहुत-सी नदियाँ करती हैं। वे मेरी धारा में आ मिलती हैं और मेरा विस्तार करती हैं। भारतीय सीमा को छूने के बाद मुझे दिहंग के नाम से जाना जाता है।

सुवनशिरी, जीयाभरली, धनशिरी, बरनदी, मानाह (मानस) सोणकोष, तिस्ता नदियाँ दाहिनी ओर से जाकर मेरा आलिंगन करती हैं। मेरी बाईं ओर आकर मिलती हैं *बुढ़ी दिहिंग, दिसांग, दिखौ, झांझी, जिजिराम* आदि नदियाँ। इन नदियों से मिलकर मेरा शरीर भारी-भरकम हो जाता है। मैं धीरे-धीरे भारत को छोड़कर बांग्लादेश की ओर बढ़ता हूँ। धुबरी नामक नगर पार करते ही मैं भारत की सीमा छोड़कर बांग्लादेश का हो जाता हूँ। अब मुझे *जमुना, पद्मा, मेघना* आदि नामों से जाना जाता है। बच्चो ! तुमने देखा होगा कि हमारे देश की प्राय: सभी नदियाँ एक सीध में धीरे-धीरे आगे बढ़ती हैं। पर मैं वैसा नहीं हूँ। बचपन में मैं उत्तर की ओर बढ़ा। फिर पूर्व की ओर मुड़ा। भारत में आने के लिए मैंने दक्षिण दिशा की ओर रुख किया। असम में मैं पूर्व से पश्चिम की ओर बढ़ा और अंत में भारत छोड़ने के साथ ही मैं दक्षिण की ओर बढ़ा। दिशाएँ बदल-बदल कर मैंने अपने आस-पास को, वहाँ के लोगों को निकट से देखा। यही कारण है कि मेरे लिए मेरे तटवर्ती लोगों के मन में इतना प्यार है।

नार्थब्रुक गेट

मैं सिर्फ एक नद या जल-प्रवाह नहीं हूँ। मैं अपने समाज का एक विनम्र सहायक और सखा भी हूँ। मैं अनादि काल से यातायात का महत्वपूर्ण साधन रहा हूँ। बंगाल की खाड़ी से जुड़कर मैं एक बड़ा नदीमार्ग तैयार करता हूँ। भारत का अंतर्देशीय जलमार्ग सं-2 मैं ही हूँ। मेरे ही माध्यम से कभी रेलगाड़ी की पटरियाँ, इंजन और डिब्बे इंग्लैंड से ऊपरी असम स्थित चाय बागानों तक पहुँचाकर रेलमार्ग का निर्माण कराया गया। कोलकाता (तत्कालीन कलकत्ता) से वायसराय लॉर्ड नॉर्थब्रुक जब असम आया तो मेरे माध्यम से ही। गुवाहाटी में उसका जहाज मेरे जिस किनारे पर रुका वहाँ नॉर्थब्रुक द्वार बना है। कभी मौका मिले तो देखना। यह आज से 140 वर्ष पहले की बात है। मेरे तट पर ही सभी प्राचीन नगर बसे हैं। *धुबरी, गोवालपाड़ा, पलाशबाड़ी, शुवालकुछि, गुवाहाटी, तेजपुर, डिब्रूगढ़* आदि स्थानों के बसने का मुख्य कारण मैं ही हूँ- यातायात का साधन और पानी का स्रोत होकर।

श्रीश्री उत्तर कमलाबारी सत्र, माजुली

मैं असम की संस्कृति का पोषक हूँ। मेरी गोद में बसा है संसार का एक प्रमुख नदी द्वीप – माजुली। इस द्वीप पर श्रीमंत शंकरदेव की परंपरा किसी थाती की तरह संजोकर रखी गई है। पुराणों में वर्णित शोणितपुर जिसे आज तेजपुर कहा जाता है मेरे ही तट पर है। यहाँ ऊषा और अनिरुद्ध का इतिहास लिखा गया था। मेरे सीने पर बहादुर नाविक अपनी नाव लेकर निकलते और मछलियाँ पकड़ कर लोगों के लिए भोजन उपलब्ध कराते हैं। उनके गीतों में मेरी वंदना मिलती है। वास्तव में मैं अपनी प्रजा का प्राण हूँ, उनका सहचर और कभी–कभी देवता भी बन जाता हूँ। अशोक अष्टमी के दिन मेरे तटों पर आकर स्नान करना मेरी प्रजा को बहुत प्रिय है। वे जानते हैं कि इस रोज मेरी धारा में गंगा नदी की पवित्रता समा जाती है।

असम प्रदेश में शदिया नामक एक स्थान है। वहाँ एक कुंड है। कहते हैं वहीं मेरी धारा में भगवान परशुराम ने अपना फरसा (परशु) धोया था। मकर संक्रांति के दिन मेरे तट पर यहाँ एक मेला लगता है। मेरे ही तट पर स्थित है नीलाचल पहाड़ी। इसके शिखर पर माँ कामाख्या का मंदिर है। यह मंदिर शक्ति के 52 पीठों में एक है। मैं संस्कृति का रखवाला हूँ तो उद्योग–धंधों का विकास भी करता हूँ। मेरे तट पर कई रिफाइनरियाँ और कई कारखाने स्थित हैं। पर्यटन के लिए भी मैं सहायक हूँ। काजीरंगा नामक राष्ट्रीय उद्यान मेरा साथी है। मैं उससे लग कर बहता हूँ। मेरी जलराशि पर स्टीमर चलाकर किनारे रहने वालों के जीवन और कला का प्रदर्शन देश–विदेश के पर्यटकों को कराया जाता है। ये पर्यटक 7 से 15 दिनों तक स्टीमर पर मेरी गोद में रहते हैं। मैं इन यात्रियों से मिलकर विभोर हो जाता हूँ।

ब्रह्मपुत्र नद के रूप में मेरी चर्चा पुराणों में तो हुई ही है, ह्वेनसांग के यात्रा–वर्णनों में भी हुई है। भारत के महान लोकगीत संग्रहकर्ता देवेंद्र सत्यार्थी ने मुझे विषय बनाकर एक उपन्यास लिखा है। इसका नाम ही है 'ब्रह्मपुत्र'। पंजाब में जन्मे इस लेखक के मन में मेरे लिए गहरा प्यार था। जब तुम बड़े हो जाओ तो इस उपन्यास को पढ़ना। संजय हाजरिका, जो एक पत्रकार हैं, उन्होंने अंग्रेजी में मेरे ऊपर एक पुस्तक लिखी है। डॉ. भूपेन हाजरिका ने अपने एक गीत में मुझे 'महामिलनर तीर्थ' कहा है। अपने प्रति व्यक्त ऐसे विचारों को सुनकर मैं अभिभूत हो जाता हूँ। मुझे लगता है मेरा जीवन सार्थक हुआ।

शराइघाट का पुल

पर मैं कभी–कभी बुरा भी करता हूँ। मैं अपनी प्रजा को अपनी बाढ़ के द्वारा बहुत कष्ट देता हूँ। लोगों का जीवन संकट में डालना मैं कभी नहीं चाहता। पर मैं क्या करूँ ? अपने उद्‌गम से अपने मुहाने तक की प्राय: 2900 कि.मी. दूरी को तय करने में मैं कभी–कभी थक जाता हूँ। इस थकान से मैं उग्र हो जाता हूँ। मेरी उग्रता

का कारण बरसात के पानी का मुझपर बढ़ता बोझ है जो मैं सह नहीं पाता। मेरे किनारों पर लगे वनों को लालची मनुष्यों ने नष्ट कर दिया है। मेरी पेटी उथली हो गई है। मैं ज्यादा पानी नहीं ढो सकता। इसी से बाढ़ आती है। तुम प्रयास करो कि मेरे किनारों पर वन बचें और बढ़ें ताकि मेरी बाढ़ कम हो सके।

हजारों साल की अवस्था है मेरी, देश–विदेश देखने का अनुभव है मेरा। मेरे पास कहने को बहुत कुछ है पर तुम अभी बच्चे हो। इतनी बातों को ही अभी जानो और बड़े होकर फिर आना मेरे पास। मैं तुमको और बातें, बहुत–सी बातें बताऊँगा।

अभ्यास–माला

पाठ से :

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दो :

(क) ब्रह्मपुत्र अंत में अपने को किस खाड़ी में सौंप देता है ?

(ख) पुराणों के अनुसार ब्रह्मपुत्र की माँ कौन है ?

(ग) पुराणों के अनुसार ब्रह्मपुत्र के पिता कौन हैं ?

(घ) मिश्मी लोग ब्रह्मपुत्र को किस नाम से पुकारते हैं ?

(ङ) प्रमुख नदी–द्वीप माजुली किसकी गोद में बचा है ?

(च) नीलाचल पहाड़ी पर किसका मंदिर है ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो :

(क) ब्रह्मपुत्र के जन्म के साथ किन–किन का संबंध बताया जाता है ?

(ख) ब्रह्मपुत्र की सही उत्पति कहाँ से हुई ?

(ग) ब्रह्मपुत्र के साथ दाहिनी तथा बाईं ओर से आकर मिलने वाली नदियों के नाम लिखो।

(घ) बांग्लादेश में जाकर मिलने के बाद ब्रह्मपुत्र को किन नामों से जाना जाता है ?

(ङ) बरसात के दिनों के ब्रह्मपुत्र का वर्णन करो।

(च) भूगर्भ शास्त्र के विद्वान ब्रह्मपुत्र की उत्पत्ति कहाँ से मानते हैं ?

(छ) ब्रह्मपुत्र–जैसे जलमार्ग के जरिए कौन–कौन सी सुविधाएँ उपलब्ध हुई हैं ?

(ज) ब्रह्मपुत्र के किनारे बसे प्रसिद्ध नगरों के नाम लिखो।

3. आशय स्पष्ट करो :

(क) 'मैं असम की संस्कृति का पोषक हूँ।'

Copyright SCERT, Assam
not be republished

(ख) 'मैं सिर्फ एक नद या जल-प्रवाह नहीं हूँ। मैं अपने समाज का एक विनम्र सहायक और सखा भी हूँ।'

4. **निम्नांकित प्रश्नों के दिए गए उत्तरों में से एक उत्तर सही है। सही उत्तर का चयन करो:**

(क) .... नामक राष्ट्रीय उद्यान मेरा साथी है।

(अ) मानस (आ) ओरांग (इ) बुढ़ापहाड़ (ई) काजीरंगा

(ख) .... ने मुझे विषय बनाकर एक उपन्यास लिखा है।

(अ) प्रेमचंद (आ) जयशंकर प्रसाद

(इ) देवेंद्र सत्यार्थी (ई) डॉ. भूपेन हाजरिका

(ग) इस .... से मैं उग्र हो जाता हूँ।

(अ) कमजोरी (आ) थकान

(इ) व्यस्तता (ई) बोझ

(घ) मेरे किनारों पर लगे वनों को .... मनुष्यों ने नष्ट कर दिया है।

(अ) दुष्ट (आ) लोभी

(इ) लालची (ई) मूर्ख

पाठ के आस-पास :

ह्वेनसांग कौन था ? वह किसके शासनकाल में असम आया था और उसने असम के बारे में क्या लिखा है ? अपने शिक्षक-शिक्षिका की मदद से पूरी जानकारी प्राप्त करो।

योग्यता-विस्तार :

1. नदियों पर अनेक कवियों ने कविताएँ लिखी हैं। उन कविताओं का चयन कर उनकी तुलना 'मैं हूँ महाबाहु ब्रह्मपुत्र' के वर्णन से करो।
2. ब्रह्मपुत्र पर गुवाहाटी में शराइघाट नामक पुल है। ब्रह्मपुत्र पर अब तक कहाँ-कहाँ और कितने पुलों का निर्माण किया जा चुका है ? सही जानकारी एकत्र करो।
3. ब्रह्मपुत्र के बीच स्थित माजुली विश्व प्रसिद्ध नदी-द्वीप है। इस द्वीप के सांस्कृतिक महत्व और वर्तमान संकट पर रिपोर्ट तैयार करो।
4. नदियों से होने वाले लाभ-नुकसान पर चर्चा करते हुए दस-दस करके कुल बीस पंक्तियों का एक निबंध लिखो।
5. 'पृथ्वी पर बढ़ते तापमान के कारण विश्व सभ्यता को अमृत एवं पोषक जल प्रदान करने वाले

Copyright- SCERT, Assam not to be republished

ग्लेशियर या तो लुप्त हो गए हैं या लुप्त होने की ओर बढ़ते जा रहे हैं। अमृत वाहिनी गंगा अपने उद्‌गम गंगोत्री के मूल स्थान से कई किलोमीटर पीछे खिसक चुकी है।' पृथ्वी पर तापमान बढ़ने के क्या-क्या कारण हो सकते हैं, लिखो।

6. किनारे पर लगे वनों को लोगों द्वारा ध्वंस करने, बरसाती पानी के साथ मिट्टी कट कर पानी में आ मिलने तथा विभिन्न कूड़े-कचरे आदि फेंके जाने के कारण ब्रह्मपुत्र की पेटी निरंतर उथली होती जा रही है। इसके कारण बाढ़ का प्रकोप भी बढ़ता जा रहा है।

इसे रोकने के लिए क्या उपाय सुझा सकते हो ? समूह में चर्चा कर लिखो।

आओ, पाठ में आए कुछ शब्दों के अर्थ जानें :

महाबाहु	=	लंबी बाँहवाला, बलवान
हिमानी	=	हिम समूह, बरफ का ढेर जो पहाड़ पर से खिसकता हुआ नीचे आता है
बर्फीली	=	बर्फ से युक्त
दुर्गम	=	बीहड़, जहाँ पहुँचना कठिन हो
खाड़ी	=	समुद्र का वह भाग जो तीन ओर स्थल से घिरा हो।
पठार	=	दूर तक फैली हुई चौरस और ऊँची जमीन
घाटी	=	दो पहाड़ों के बीच की नीची जमीन
सतह	=	तल, किसी वस्तु का ऊपरी भाग
दिशा	=	क्षितिज मंडल के चार- पूर्व, पश्चिम, दक्षिण, उत्तर भागों में से कोई
जल-प्रवाह	=	पानी का बहाव, पानी की धारा
परंपरा	=	प्रथा, प्रणाली जो बहुत दिनों से चली आ रही हो
थाती	=	धरोहर, अमानत
फरसा	=	परशु
स्टीमर	=	भाप से चलने वाला छोटा जहाज
विभोर	=	निमग्न, तल्लीन
पर्यटन	=	देश-दर्शन और मनोरंजन के लिए विभिन्न स्थानों का भ्रमण
मुहाना	=	नदी-मुख, समुद्र में नदी के गिरने का स्थान
थकान	=	श्रांति, थकावट
बोझ	=	भार, वजन
लालची	=	दूसरों की वस्तु/संपत्ति में इच्छा रखने वाला
उथली	=	कम गहरी
पर्यटक	=	देश-विदेश में घूमने-फिरने वाला
पेटी	=	नदी का पेट जहाँ पानी भरा रहता है
अनुभव	=	प्रत्यक्ष ज्ञान
तट	=	नदी का किनारा

Copyright - SCERT, Assam
not be republished

पाठों में निहित योग्यताएँ

पाठ	योग्यताएँ
1. भारत हमको जान से प्यारा है	➲ शुद्ध उच्चारण से और सही लय में गीत गाने की दक्षता ➲ इस प्रकार के अन्य गीतों को गाने तथा समझने की योग्यता ➲ हिंदी की उर्दू शैली में व्यवहार किए जाने वाले कुछ शब्दों के प्रयोग का ज्ञान ➲ शब्द-कोश के उपयोग का ज्ञान ➲ देश-प्रेम तथा देश के प्रति अपने कर्तव्य का बोध
2. कश्मीरी सेब	➲ कहानी के माध्यम से व्यावहारिकता का ज्ञान प्राप्त करना। ➲ 'जागो ग्राहक जागो' संदेश का तात्पर्य समझना। ➲ प्रस्तुत कहानीकार प्रेमचंद की कहानी-शैली का ज्ञान। ➲ कहानी कथन की योग्यता। ➲ आम व्यवहार में आए शब्दों का ज्ञान और दैनिक बातचीत में उनके प्रयोग की दक्षता। ➲ संज्ञा, विशेषण और क्रिया के ज्ञान।
3. मैडम मेरी क्यूरी	➲ शुद्ध उच्चारण और उपयुक्त पठन-शैली से पाठ कर पाना ➲ विश्व प्रसिद्ध व्यक्तियों की साधना और विशिष्ट कार्यों की जानकारी तथा अनुप्रेरणा प्राप्त करना। ➲ वैज्ञानिक आविष्कारों की महत्ता तथा सामान्य जीवन में उनकी उपयोगिता का अनुभव करना। ➲ पाठ की वर्णन-शैली को समझकर अन्य विषयों को इसी प्रकार लिखकर अभिव्यक्त कर पाना। ➲ विशिष्ट व्यक्ति, आविष्कार आदि की परिचर्या में भाग लेने की क्षमता। ➲ सर्वनाम का प्रयोग और क्रिया का रूपांतर।
4. जलाशय के किनारे कुहरी थी	➲ सही उच्चारण और उपयुक्त वाचन शैली में कविता का सस्वर पाठ करना। ➲ प्राकृतिक सौंदर्य की संवेदना और अनुभव। ➲ ऋतु परिवर्तन के साथ प्रकृति में होने वाले परिवर्तनों की ओर ध्यान आकर्षित करना। ➲ प्रकृति विषयक विविध प्रकार की रचनाओं का संग्रह करने की प्रवृत्ति जगाना। ➲ कविता में अभिव्यक्त भावों को अपने शब्दों में सुनियोजित ढंग से प्रकट करने की क्षमता।

Copyright- SCERT, Assam not be republished

- काल का प्रयोग, सामान्य ज्ञान।

5. उससे न कहना

- अपने मनोभावों और विचारों को हिंदी में लिखकर अभिव्यक्त कर पाना
- पाठ्य, नाटकीय संवादों की प्रस्तुति आदि में दक्षता बढ़ाना
- देशप्रेम बढ़ाने के साथ-साथ अपने देश की रक्षा तथा उसकी सांस्कृतिक परंपरा के प्रति जागरूक करने के अतिरिक्त दूसरों के प्रति सहृदय बनाने में सहायता करना
- पाठ्य अथवा रूपरेखा पर आधारित नाटकीय संवाद आदि उपयुक्त अभिव्यक्ति शैली में उपस्थापित कर पाना
- बातचीत करने का अवसर मिलने के साथ-साथ दैनिक जीवन में आवश्यकीय वार्तालाप, संभाषण, शिष्टाचार संबंधी बातें, लेखन आदि के लिए उपयुक्त भाषा-व्यवहार में दक्षता अर्जन करना
- भाषा-अध्ययन
  (क) क्रिया रूप परिवर्तन का जानकारी
  (ख) विभक्ति चिह्न का ज्ञान

6. भारतीय संगीत की एक झलक

- साहित्य में संगीत के स्थान तथा महत्व की जानकारी
- भारतीय संगीत की विविध धाराएँ- लोक संगीत तथा शास्त्रीय संगीत और शास्त्रीय संगीत की हिंदुस्तानी और कर्नाटकी शैलियों की जानकारी
- संगीत के क्षेत्र को समृद्ध करने वाले प्रमुख कलाकारों का परिचय तथा अनुप्रेरणा प्राप्त करना
- गीतों का संग्रह करना, विशिष्ट कलाकारों के चित्र संग्रह करके अलबम बनाना आदि परियोजना कार्यों की योग्यता
- व्याकरण : वाक्य शुद्धिकरण, कर्मवाच्य, भूतकाल

7. पहली बूँद

- शुद्ध उच्चारण और वाचन-शैली से कविता पाठ करने की योग्यता
- ऋतुओं का ज्ञान और विभिन्न ऋतुओं में प्रकृति में होने वाले परिवर्तन का ज्ञान और बोध
- उपमा, रूपक आदि अलंकारों के काव्य में प्रयोग को समझना
- भाषा-अध्ययन
  (क) अनुस्वार और अनुनासिक का प्रयोग
  (ख) समानार्थक शब्द
  (ग) विलोम शब्द
  (घ) ध्वन्यात्मक शब्द
- प्रकृति के संरक्षण की आवश्यकताओं का बोध
- वसंत ऋतु में मनाए जाने वाले उत्सवों की जानकारी

8. भारत दर्शन

- यात्रा, सफर आदि के बारे में जानकारी प्राप्त करना
- यात्रा के ऐतिहासिक महत्व के बारे में जानना

Copyright-SCERT, Assam not be republished

- इससे भिन्न धर्म, भाषा, अंचल, संप्रदाय, रहन-सहन आदि के बारे में जिज्ञासा भाव लाना और समझ पाना
- भारतवर्ष के विभिन्न स्तंभ, स्मारक निधि आदि के बारे में जानकारी प्राप्त करना
- विविध कार्यक्रमों पर आधरित भाषण, चर्चा, परिचर्या आदि सुनकर समझ पाना और लिख पाना
- व्याकरण
  (क) विस्मयादिवोधक शब्द
  (ख) समुच्चयवोधक शब्द
  (ग) भविष्यत काल

9. जैसे को तैसा

- कहानी-कथन के माध्यम से नीति शिक्षा के विकास करने की योग्यता
- अपने मनोभावों और विचारों को सही उतार-चढ़ाव तथा उच्चारण और रीति से अभिव्यक्त करना
- भिन्न व्यक्तियों की विशिष्ट कथन शैली को सुनकर समझना
- जीव-जंतुओं की सुरक्षा का ज्ञान
- भाषा-अध्ययन :
  (क) सरल, संयुक्त और मिश्र वाक्यों के शुद्ध प्रयोग
  (ख) शुद्ध वाक्य लेखन
  (ग) कारक-विभक्ति का प्रयोग
- प्राणी-हिंसा को रोकने का बोध
- शब्द-कोशों के उपयोग करने की सामर्थ्य

10. गोकुल-लीला

- शुद्ध उच्चारण और वाचन-शैली से कविता-पाठ करने की योग्यता
- आज की मानक हिंदी के अलावा प्राचीन बोली ब्रजभाषा का ज्ञान
- प्राचीन कवियों का परिचय प्राप्त कराना
- बालक कृष्ण की बाल-लीलाओं के वर्णन का ज्ञान
- भाषा-अध्ययन :
  (क) श्रुतिसम शब्दों की भिन्नार्थकता का ज्ञान
  (ख) शब्द-युग्मों का अंतर जानने की कोशिश
  (ग) पर्यायवाची शब्दों का ज्ञान

11. भारत की भाषिक एकता

- अपने मनोभावों और विचारों को शुद्ध हिंदी में बोल और लिखकर अभिव्यक्त कर पाना
- भारत की विभिन्न भाषाओं के बीच की एकता के तत्वों का बोध
- अपने देश की सांस्कृतिक परंपरा के प्रति आग्रह तथा आदर की भावना
- अपनी भाषा के प्रति श्रद्धा का भाव रखना तथा विविध भाषाओं के ज्ञान की वृद्धि के साथ-साथ अपनी-अपनी भाषाओं के विकास करने का प्रयत्न

Copyright-SCERT, Assam
not be republished

- भारत में प्रचलित विविध लिपियों का ज्ञान
- विविध प्रकार के मौलिक तथा अनूदित साहित्य का अध्ययन, पुस्तकालय का उपयोग
- व्याकरण : वाक्य परिवर्तन

12. बाढ़ का मुकाबला

- भाषा सीखने के लिए आग्रह उत्पन्न करना
- अपने मनोभावों और विचारों को उपयुक्त वाक्यों में व्यक्त कर पाना
- आँखों-देखी घटनाओं को सहजता से हिंदी में अभिव्यक्त कर सकना
- अपने परिवेश में प्राप्त वस्तुओं और अन्य विषयों पर अनुच्छेद लिख पाना
- आवेदन-पत्र, शिकायती पत्र आदि लिखने का सामर्थ्य बढ़ाना
- सामूहिक चर्चा आदि में चर्चित विषय पर हिंदी में अपना विचार-वक्तव्य प्रस्तुत कर पाना

13. मेरा नया बचपन

- शुद्ध उच्चारण और हाव-भाव के साथ कविता पाठ करने की योग्यता
- कविता की विषयवस्तु को पढ़कर समझ पाना
- कविता की तुक लय आदि को समझना
- मानव जीवन से संबंधित भिन्न कालों को समझ पाना
- कविता के मूलभाव को गद्य या सारांश रूप में लिख पाना
- कविता-पाठ प्रतियोगिता में भाग लेने की योग्यता का अर्जन
- व्याकरण :
  (क) पर्यायवाची शब्द
  (ख) सार या सारांश लेखन

14. मैं हूँ महाबाहु ब्रह्मपुत्र

- शुद्ध उच्चारण और उपयुक्त पठन शैली से पाठ कर पाना
- सृजनात्मक लेखन की क्षमता का विकास करना
- निबंध प्रस्तुत करने में विद्यार्थियों को उनकी सांस्कृतिक परंपरा के प्रति जागरूक कर पाना
- अपने परिवेश में प्राप्त नद-नदी, वस्तुओं आदि पर आधारित विषय को वर्णनात्मक शैली में उपस्थापित कर पाना
- दिए गए विषय पर वर्णनात्मक तथा विवरणात्मक निबंध लिखना
- अपने मनोभावों और विचारों को सही उतार-चढ़ाव तथा शुद्ध उच्चारण और रीति से व्यक्त कर पाना

Copyright-SCERT, Assam
not be republished

सड़क दुर्घटना से बचने के लिए अपनायी जाने वाली सावधानियाँ

सड़क पर चलते समय –

- सड़क पर पैदल चलते समय हमेशा अपनी बायीं ओर चलें।
- सड़क पार करते समय दाएँ-बाएँ देखकर पार करें।
- सड़क पर फुटपाथ होने पर हमेशा फुटपाथ पर ही चलें।
- 'जेब्रा चिह्न' वाली सड़क पर हमेशा जेब्रा चिह्न अंकित स्थान से ही पार करें।
- रात में टॉर्च लाइट का इस्तेमाल करें।
- साइकिल चलाते समय अन्य व्यक्ति को बिठाकर न चलाएँ।

रेल क्रॉसिंग पार करते समय –

- रेल क्रॉसिंग का फाटक बंद होने पर पार न करें।
- जब तक रेल क्रॉसिंग से रेल नहीं गुजरती, तब तक रेल की पटरी पार न करें।
- जब तक रेल क्रॉसिंग के दोनों ओर के फाटक न खुलें, तब तक रेल की पटरी पार न करें।

बस की सवारी करते समय –

- बस पर सावधानीपूर्वक चढ़ें।
- सवारी की संख्या अधिक होने पर पंक्तिबद्ध होकर चढ़ें।
- बस के पायदान पर लटककर सवारी न करें।
- बस पूरी तरह रुकने के बाद ही उतरें या चढ़ें।
- बस से उतरते समय दोनों तरफ भलीभाँति देख लें।
- बाहर मत थूकें।
- हाथ-पैर या सिर खिड़की से बाहर न निकालें।

सड़क पर पैदल चलते समय या पार होते समय बच्चे, बूढ़े या शारीरिक रूप से अशक्त व्यक्तियों की मदद करना हमारा दायित्व और कर्तव्य है।

Copyright - SCERT Assam
not to be republished

असम सरकार द्वारा निःशुल्क वितरण हेतु प्रकाशित पाठ्यपुस्तक